B.A. III - Sem VI

Paper - XV

History of West Asia

अरब-इजरायल संघर्ष पर निबन्ध

14-15 मई, 1948 की मध्यरात्रि में फिलिस्तीन पर से ब्रिटेन अपना प्रभुत्व हटा लिया। संयुक्त राष्ट्र संघ के फैसले का इन्तजार न कर यहूदियों ने इसी समय तेल अवीव में इजरायल राज्य की स्थापना की घोषणा कर दी। इस नए राज्य को तुरंत ही संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ और ब्रिटेन की मान्यता मिल गई।

अरब राष्ट्र इजरायल की स्थापना स्वीकार करने के लिए कतई तैयार नहीं थे। जिस दिन यहूदी राज्य की स्थापना हुई उसी दिन मिस्र, जॉर्डन, ईराक और सीरिया की सेनाएँ इजरायल पर आक्रमण शुरु कर दिया। लेकिन इजरायल ने डटकर सामना किया। अपने उत्कृष्ट रणकौशल और विदेशी सहायता के कारण वह विजयी रहा। संयुक्त राष्ट्र के मध्यस्थ राल्फ बुंच के प्रयत्नों से 1949 ई० में दोनों पक्षों के बीच युद्ध बंद हुआ।

इस विजय से इजरायल का पलड़ा भारी हो गया। इजरायल का क्षेत्रफल छप्पन सौ वर्गमील से बढ़कर छिहत्तर सौ वर्गमील हो गया। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में बसनेवाले अरबों को उसने निकाल बाहर किया। युद्ध में मिस्र ने गाजा तथा बीरशेबा पर अधिकार कर लिया था और जेरुसलम के उत्तरी भाग से यहूदियों को भगा दिया था। संयुक्त राष्ट्र संघ

के हस्तक्षेप से मिस्र का गाजापट्टी पर अधिकार स्वीकार कर लिया गया। जेरूसलम नगर दो हिस्सों में बाँट दिया गया। लगभग एक लाख की आबादी वाला बड़ा हिस्सा यहूदियों के कब्जे में आ गया और पचास हजार की आबादीवाला हिस्सा जोर्डन के अधिकार में रहा। इस तरह दोनों राज्यों की सीमा इस नगर से होकर गुजरती रखी गई। इजराइलियों ने अरबों को हटाना शुरु किया। फलतः 1953 ई० तक दस लाख अरबों को इजरायल छोड़कर भाग जाना पड़ा।

इजरायल राज्य की स्थापना और फिर युद्ध में इजरायल के हाथों पराजय ने सम्पूर्ण अरब-जगत को इजरायल का स्थायी दुश्मन बना दिया। अब इजरायल का उन्होंने आर्थिक बहिष्कार किया। इजरायल के लिए मिस्र ने स्वेज नहर बंद कर दिया। माल ढोने वाले जहाजों का यातायात पूर्णतः बन्द कर दिया। इजरायल के साथ सभी अरब देशों ने अपना व्यापारिक सम्बन्ध ~~तोड़~~ तोड़ ~~लिया~~। ~~इराक~~ ने पेट्रोल भेजना बंद कर दिया।

इजरायल के समक्ष शरणार्थियों की समस्याएं भी थी। इजरायल ने बड़े धैर्य के साथ सारी कठिनाईयों का मुकाबला किया। उसने यूरोपिय देशों के साथ व्यापारिक समझौते किए और अमेरिका में बसे अनेक सम्पन्न यहूदियों से विपुल आर्थिक सहायता प्राप्त की। अब इजरायल पश्चिमी एशिया का सम्पन्न और विकसित देश हो गया।

इजरायल की प्रगति से अरब राज्यों की और भी चिन्ता हुई। अब इजरायल के सहवर्ती देशों में सैनिक झड़पें शुरु हो गई। जब मई 1956 में संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव ने इस क्षेत्र का दौरा किया, तब इन देशों के तनाव में थोड़ी कमी आई।

Scanned with CamScanner

द्वितीय अरब - इजरायल संघर्ष -

जुलाई 1956 में स्वेज नहर के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् इजरायल, मिस्त्र और जॉर्डन की सीमाओं पर स्थिति पुनः गम्भीर हो गई। अक्टूबर, 1956 को इजरायल ने एकाएक सिनाई प्रायद्वीप पर आक्रमण कर दिया। इजरायल का कहना था कि यह क्षेत्र फेदायिन संगठन का अड्डा है, जहाँ से इजरायल पर हमेशा आक्रमण होते रहते हैं। इसके बाद ब्रिटेन और फ्रांस ने भी मिस्त्र पर आक्रमण कर दिया।

पाँच दिनों की लड़ाई के बाद सिनाई प्रायद्वीप पर इजरायल का नियंत्रण स्थापित हो गया। लेकिन संयुक्त राष्ट्रसंघ ने हस्तक्षेप किया। संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रस्ताव का पालन करते हुए ब्रिटेन और फ्रांस ने 22 दिसम्बर 1956 को मिस्त्र से अपनी फौजें हटा ली। लेकिन इजरायल कुछ शर्तों के साथ सेनाएँ हटाना स्वीकार कर लिया और 7 मार्च को मिस्त्र से सब सेनाएँ हटा ली गई।

1957 से 1967 के बीच अरब - इजरायल संबंध -

यद्यपि संयुक्त राष्ट्र-संघ के हस्तक्षेप से अरब-राज्यों और इजरायल के बीच सशस्त्र संघर्ष समाप्त हो गया; किंतु अरब-इजरायल संबंध में कोई प्रगति नहीं हुई। एक तीसरे संघर्ष की तैयारी होने लगी।

1957 ई० में इजरायल और जॉर्डन की सीमाओं पर अनेक घटनाएँ हुईं। इसके कारण सीमा पर हमेशा तनाव बना रहा। फरवरी - मार्च 1959 ई० में मिस्त्र की सरकार ने स्वेज नहर से गुजरने वाले अनेक जहाजों को रोक लिया जो इजरायल के बंदरगाह पर जा रहे थे। इसके कारण दोनों देशों में के बीच

Scanned with CamScanner

तनाव बढ़ गया।

सीरिया के साथ भी इजरायल के झगड़े चलते रहे। फरवरी, 1960 ई० में तावफिक तानव स्थान पर दोनों देशों की सैनिक-टुकड़ियों में जबर्दस्त मुठभेड़ हुई। इस प्रकार अरब राष्ट्र और इजराइल के सम्बन्ध दिन-प्रतिदिन बिगड़ते चले गए।

जॉर्डन नदी के पानी के विवाद ने भी अरब-इजरायल कलह को काफी बढ़ाया। जॉर्डन, सीरिया, लेबनान और इजरायल इन चार राज्यों में से होकर बहने वाली नदी के पानी के उपयोग के बारे में झगड़ा बढ़ जाने पर एरिक जान्सटन की योजना के अनुसार यह निश्चित किया गया कि इसके जल का 67% भाग अरब राज्य और 33% भाग इजराइल अपने उपयोग में लाए। इजरायल जल के उपयोग करने की अपनी योजना प्रारम्भ कर दी। इससे अरब राष्ट्रों को बड़ी चिन्ता हुई। अतः जनवरी, 1964 ई० में तेरह अरब राज्यों का काहिरा में एक शिखर सम्मेलन हुआ जिसमें मुख्यतः तीन बातों पर विचार हुआ - (1) जॉर्डन नदी के पानी की समस्या (2) अरब राज्यों की संयुक्त सेना का निर्माण तथा (3) सारे अरब राष्ट्रों को मिलकर इजरायल को नष्ट करने का प्रयास करना।

इस प्रकार इस सम्मेलन में एक नए अरब - ~~इस्त्रायल~~ इजरायल-संघर्ष की भूमिका तैयार हुई।

Scanned with CamScanner

तृतीय अरब-इजरायल संघर्ष (1967 ई०) -

अरब और इजरायल में सदैव आरोप-प्रत्यारोप हो रहे थे। इजरायल ने सीरियाई फौज को सीमा उल्लंघन नहीं करने को कह रखी लेकिन अरब राज्य ने चेतावनी देते हुए कहा कि अगर सीरिया पर आक्रमण हुआ तो संयुक्त अरब गणराज्य पर आक्रमण माना जाएगा। सीरिया और इजरायल के बीच मतभेद कम नहीं हुए

मार्च 1967 ई० के प्रथम सप्ताह में तिबेरियास झील के किनारे इजरायली किसान ट्रैक्टरों से भूमि जोत रहे थे कि अचानक सीरियाई सीमा से गोले बरसने लगे, जिससे इजरायल के कई ट्रैक्टर बेकार हो गए और कई इजरायली नागरिक मारे गए। इजरायल ने इसका बदला लिया और 7 march को सीरिया और इजरायल के लड़ाकू जहाजों में पिछले ग्यारह वर्षों में सबसे भयंकर युद्ध हुआ। तिबेरियास झील के पूर्व और द० पू० में सीरिया की सीमा के अन्तर्गत एक लम्बी पट्टी है, जिसे इजरायल अपनी सीमा मानता है। इसके अलावे अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर कुछ छोटे-छोटे प्रदेश थे, जिनपर इजरायल अपना अधिकार चाहता था, इसे सीरिया को मानना पड़ा।

सीरिया और इजरायल की सैनिक मुठभेड़ों ने सारे अरब राष्ट्रों में फिर इजरायल विरोधी आग प्रज्वलित कर दी

23 मई को संयुक्त अरब गणराज्यों द्वारा अक्काबा की खाड़ी की नाकेबंदी करने की घोषणा कर दी गई। अक्काबा की खाड़ी के प्रवेशद्वार में तीरान जलडमरू-

Scanned with CamScanner

मध्य थी। इसकी नाकेबन्दी इसलिए की गई ताकि इजरायली या इसकी मित्र देशों के जहाज इजरायली बन्दरगाह एलात तक न पहुँच पाएं। लाल सागर में भी इजरायल के निकास को बन्द कर दिया गया।

25 मई को गाजा पट्टी में फिलिस्तीनी और इजरायली सैनिक टुकड़ियों में मुठभेड़ हुई। 26 मई को अरबी विमानभेदी तोपों द्वारा दो इजरायली बमवर्षकों पर गोली-वर्षा की गई।

1 जून को इराकी युद्ध विमान संयुक्त अरब गणराज्य के पक्ष में गुप्त अड्डों की ओर रवाना हो गए।

2 जून को सीमा पर इजरायली-सीरियाई सैनिकों की मुठभेड़ हुई। 7 जून को इजरायल ने अकाबा की खाड़ी पर स्थित शर्मअलशेख पर कब्जा कर लिया।

8 जून तक इजरायली सेनाएँ सिनाई प्रायद्वीप को पार करती हुई स्वेज नहर के पूर्वी किनारे पर आ पहुँची। अब स्पष्ट हो गया कि इजरायल की बढ़त को रोकना संभव नहीं, तब संयुक्त अरब गणराज्य ने युद्धविराम की माँग स्वीकार कर ली। लेकिन इजरायल ने कई शर्तें पेश कीं जैसे- (1) अरब राष्ट्र उसे राजनयिक मान्यता दें; (2) स्वेज नहर और अकाबा खाड़ी में उसे इसी तरह जहाजरानी के अधिकार मिलें, जैसे दूसरे देशों को प्राप्त है, (3) जेरूसलम इजरायल के कब्जे में रहे, (4) जोर्डन नदी के पश्चिम की तरफ का इलाका फिलिस्तीन विस्थापितों के लिए अलग कर दिया जाए (5) सीरियाई सीमान्त का वह पहाड़ी इलाका जहाँ से सीरियाई सैनिक उत्पाद मचाते हैं, इजरायल के ही कब्जे में रहे और (6) इजरायल से छेड़छाड़ न करने का आश्वासन दिया जाए।

अरब गणराज्य इसपर सहमत नहीं हुए।

Scanned with CamScanner

पश्चिम एशिया के अरब राज्यों और इजरायल के बीच शांति समझौता कराने के लिए कई प्रयास हुए। अंततः 1969 ई० में अरब राज्यों का रबात (स्थान) में एक सम्मेलन हुआ। इसका कोई परिणाम नहीं निकला। अंततः 28 सितम्बर 1970 ई को राष्ट्रपति नासिर की एकाएक मृत्यु हो गई। इससे पश्चिम एशिया की स्थिति में एक गतिरोध बना रहा।

चौथा अरब - इजरायल युद्ध, 1973

अक्टूबर, 1973 में इजरायल और अरब देशों के बीच चौथा युद्ध हुआ। इस बार पहला हमला अरब देशों ने किया। मिस्र के राष्ट्रपति सदात के निर्देशन में हमला हुआ था।

कारण था - कि युद्ध में खोई हुई अपनी भूमि को प्राप्त करना। पश्चिमी शक्तियों द्वारा समझौते के लिए इजरायल पर दबाव डालना।

मिस्री सेनाएँ सिनाई क्षेत्र में प्रविष्ट हो गई। गोलन पहाड़ियों पर सीरियाई सेना तेजी से इजरायलियों पर हमला किया, जिसे 1967 से इजरायलियों ने अधिकृत कर रखा था। कुवैत, मोरक्को, अल्जीरिया, इराक, लीबिया और जॉर्डन की सेनाएँ सीरिया की सहायता कर रही थीं। इसी समय इजरायल की प्रधानमंत्री श्रीमती गोल्डामीर ने इजरायल की संसद में घोषणा की कि इजरायल तबतक, किसी समझौता - वार्ता में भाग नहीं लेगा जब तक कि दुश्मन की ताकत को नेस्तनाबूद न कर दे।

युद्ध की विभीषिका भयानक थी। अमेरिका इजरायल की मदद कर रहा था और रूस मिस्र तथा सीरिया की। अंततः दोनों महाशक्तियों अपने विवेक का इस्तेमाल

Scanned with CamScanner

करते हुए शांति प्रस्ताव रखा। लेकिन दोनों पक्ष युद्ध-विराम के लिए तैयार नहीं थे। 27 अक्टूबर को सुरक्षा परिषद की आपात बैठक हुई जिसमें युद्ध विराम के उल्लंघन को रोकने हेतु एक संयुक्त राष्ट्रीय आपात सेना भेजने का निर्णय लिया गया।

शांति प्रयास -

शांति समझौते में अमेरिका के सचिव डॉ० हेनरी किसिंजर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अन्त में 15 मार्च 1979 को पश्चिम एशिया से वाशिंगटन लौटकर राष्ट्रपति कार्टर ने घोषणा की कि शांति संधि का अनुमोदन इसरायल और मिस्त्र के संसदों द्वारा किया जाएगा। छः महीने के अंदर दोनों देश परस्पर राजदूतों का आदान-प्रदान करेंगे। शांति-संधि की शर्तें निम्न थीं-

(1) सिनाई क्षेत्र से जबतक इसरायली सेना भारी मात्रा में वापस नहीं जाती तब तक मिस्त्र और इसरायल के राजदूतों का आदान-प्रदान नहीं होगा।

(2) गाजा पट्टी पर मिस्त्र का ऐसा अधिकार रहेगा कि वह वहाँ निर्वाचन करा सकेगा।

(3) सिनाई के तेल-क्षेत्र से प्राप्त कुछ तेल मिस्त्र इसरायल को बेचेगा।

(4) पश्चिमी लोकतंत्रों के पक्ष में सादात ने "मध्यपूर्व का रक्षक" होना स्वीकार किया। इसके बदले में अमेरिका मिस्त्र को भारी मात्रा में हथियार और आर्थिक सहायता देगा।

(5) अमेरिका इसरायल को भी भारी मात्रा में हथियार, विमान और पुर्जे देगा।

इस प्रकार महाशक्तियों के प्रयास से अरब-इसरायल संघर्ष अन्यायी रूप से समाप्त हो गया।

Scanned with CamScanner